Hema Agarwal
(Assistant Professor
D.N. College, Meerut)

E-Content-07

B.Ed - IInd year.

Course Code - E-401

Course Title - Assessment for Learning

Unit - I

Topic - Types of Evaluation.

मूल्यांकन के प्रकार (Types of Evaluation)

मूल्यांकन को तीन प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता है -

I. वर्गीकरण के अनुसार -

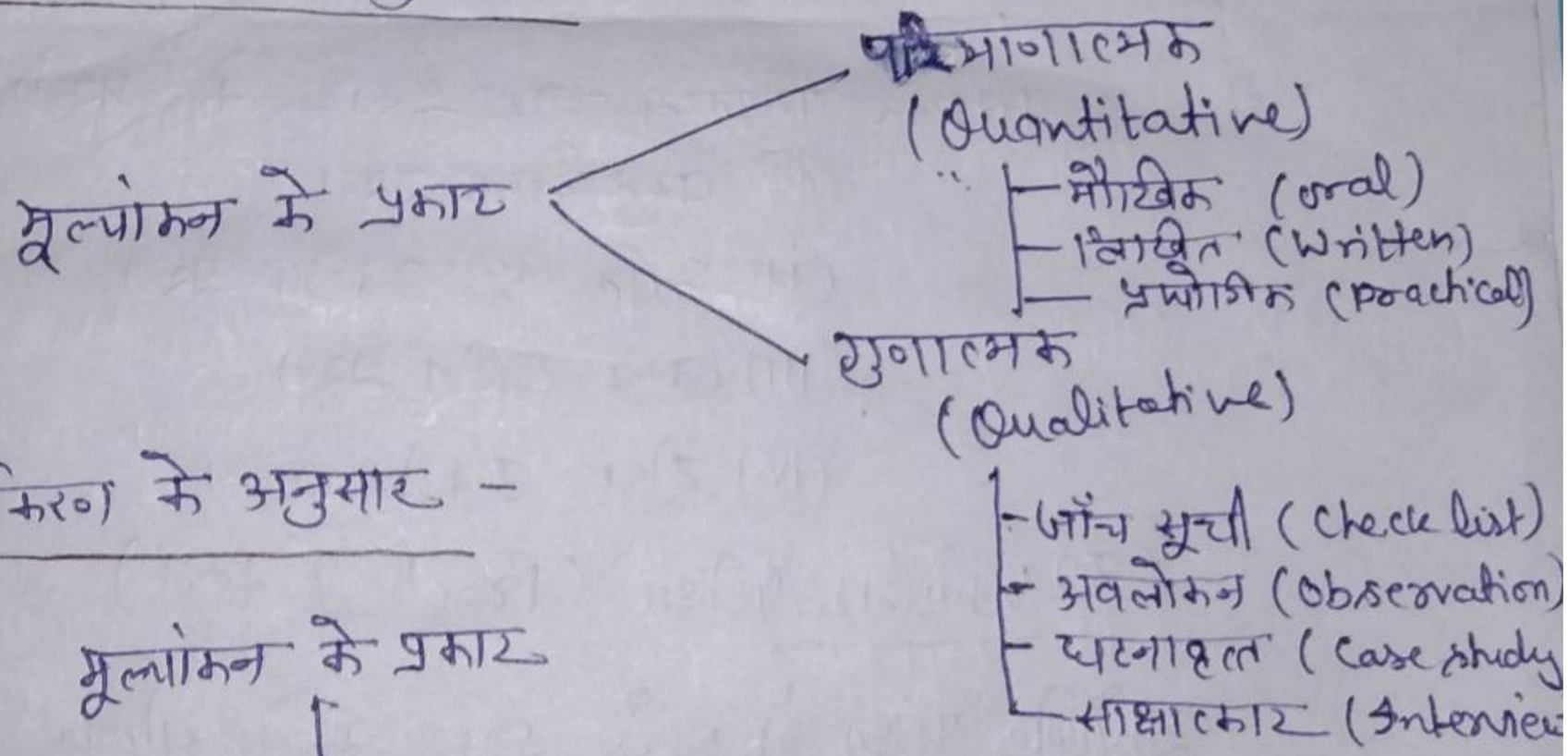

II. वर्गीकरण के अनुसार -

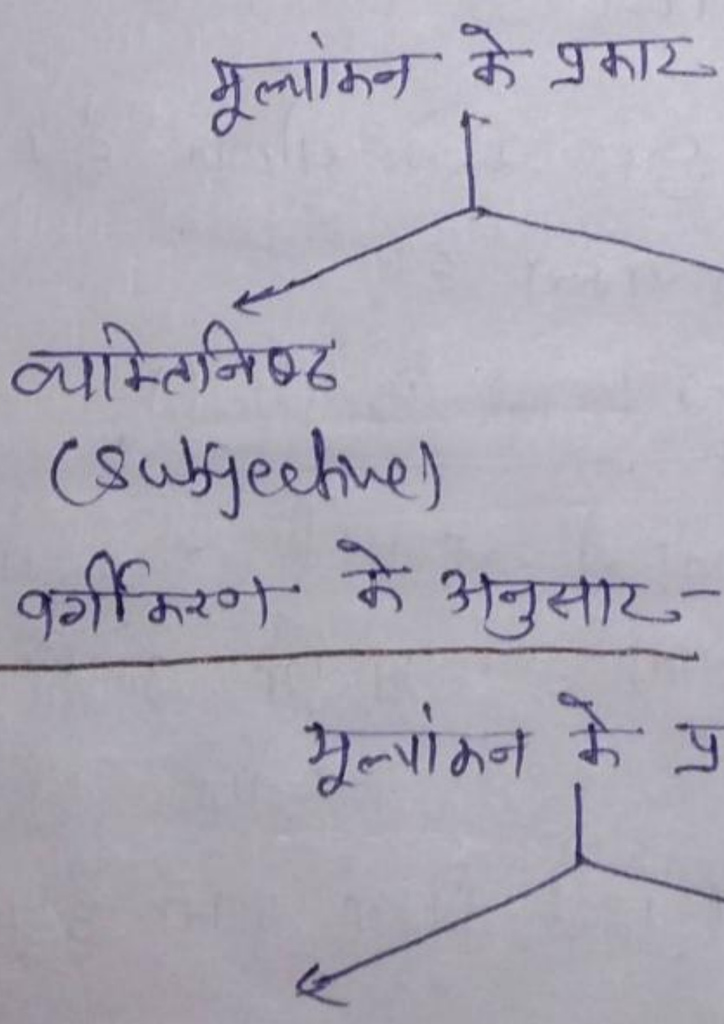

III. वर्गीकरण के अनुसार -

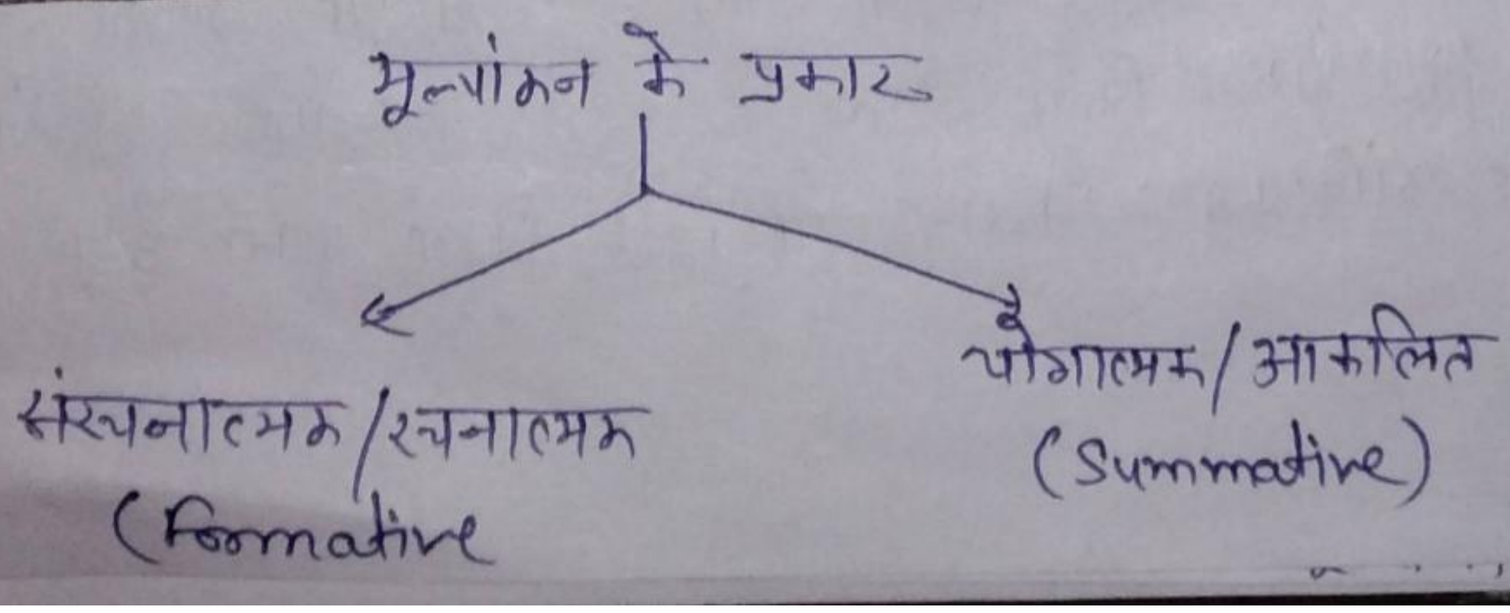

Scanned by TapScanner

I वर्गीकरण के अनुसार -

मूल्यांकन के दो प्रकार है।

(1) परिमाणात्मक मूल्यांकन (Quantitative Evaluation)

परिमाणात्मक मूल्यांकन को भी हम छात्रों की परीक्षा के तरीकों के आधार पर तीन भागों मे विभाजित कर सकते हैं:-

(1) मौखिक परीक्षा (oral test) - मौखिक परीक्षा का प्रयोग ग्लेडाडड्स ने शुरू किया था। मौखिक परीक्षा को सुकरात ने भी महत्वपूर्ण स्थान दिया था। मौखिक परीक्षा मे छात्र को बुलाकर उनसे प्रश्न पूछे जाते हैं। तथा उनके ज्ञान, अभिव्यक्ति की क्षमता तथा उसके आत्मविश्वास को परखा जाता है।

(2) लिखित परीक्षा (Written test) -

लिखित परीक्षा मे चार प्रकार के प्रश्नों का पूछा जा सकता है।

(i) वस्तुनिष्ठ प्रश्न
(ii) अति लघु उत्तरीय प्रश्न
(iii) लघु उत्तरीय प्रश्न
(iv) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(3) प्रायोगिक परीक्षा (Practical test) -

प्रायोगिक परीक्षा मे बच्चे कुछ करके सीखते हैं। प्रायोगिक मूल्यांकन को दो भागों में बाँटा जा सकता है।

(1) आन्तरिक प्रयोग (Internal Practical) -

जब किसी सूत्र को प्रयोगशाला में सामग्री, उपकरण की सहायता से छात्र द्वारा सिद्ध किया जाता है; जिसमे उसकी सफलता-असफलता का मूल्यांकन किया जाता है, इसे आन्तरिक मूल्यांकन कहते हैं। यह अधिकतर विज्ञान विषय में किया जाता है।

Scanned by TapScanner

(2.) बाह्य प्रयोग (External Practical) -

इस प्रकार के मूल्यांकन को छात्र के जीवन से जोड़कर ज्ञान, सिद्धान्त को व्यवहार रूप में परिवर्तित करने को कहा जाता है जैसे - चित्र बनाना, मिट्टी का कार्य करना आदि। यह मूल्यांकन शारीरिक शिक्षा, गृहविज्ञान, कला आदि में होता है।

(B) गुणात्मक मूल्यांकन (Qualitative Evaluation) -

गुणात्मक मूल्यांकन हम चार भागों मे विभाजित करते है -

(i) जाँच सूची - जाँच सूची का उपयोग छात्र के प्रयोगात्मक ज्ञान, आदि अभिवृत्तियों (attitudes) रुचियों, मूल्यों आदि के सम्बन्ध मे उपलब्धियों का पता लगाने के उद्देश्य से किया जाता है।

(ii) अवलोकन - किसी व्यक्ति या समूह के व्यवहार को देखकर उसका मूल्यांकन किया जाता है।

(iii) घटनावृत्त - यह शिक्षार्थियों के जीवन की सार्थक घटना का विवरण होता है।

(iv) साक्षात्कार - साक्षात्कार में व्यक्तियों को सामने-सामने बैठाकर प्रश्न पूछे जाते है। उनके आधार पर उनकी योग्यताओं का मूल्यांकन किया जाता है।

II वर्गीकरण के अनुसार

इस वर्गीकरण के अनुसार मूल्यांकन दो प्रकार का होता है -

(A) व्यक्तिनिष्ठ (Subjective) -

सामाजिक व सांस्कृतिक मानदण्ड अपने मे पूर्ण स्पष्ट तथा निश्चित नहीं होते तथा मूल्यांकनकर्ता इन्हे अपने - अपने दृष्टिकोण से लेते व प्रयोग करते है। जिसके फलस्वरूप यह स्पष्ट होता है कि सामाजिक व सांस्कृतिक मानदण्डों पर आधारित मूल्यांकन Subjective होता है। Example - Essay Type Test का मूल्यांकन

(B) वस्तुनिष्ठ (Objective) - वैज्ञानिक मानदण्ड (scientific criteria) अपने मे पूर्ण, स्पष्ट व निश्चित होते है, तथा मूल्यांकनकर्ता के व्यक्तिगत विचारों व दृष्टिकोणों का उन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता अत: इस प्रकार का मूल्यांकन वस्तुनिष्ठ कहलाता है - उदाहरण - objective Type Test का मूल्यांकन

Scanned by TapScanner

III वर्गीकरण के अनुसार

मिचैल स्क्रीवेन (Michael Scriven) ने 1967 में मूल्यांकन के दो प्रकार बताये हैं –

(A) संरचनात्मक या रचनात्मक मूल्यांकन (Formative Evaluation)
(B) योगात्मक या आकलित मूल्यांकन (Summative Evaluation)

[A] संरचनात्मक या रचनात्मक मूल्यांकन (Formative Evaluation)

संरचनात्मक मूल्यांकन में किसी शैक्षिक कार्यक्रम, शिक्षा नीति, योजना, शिक्षणविधि, पाठ्यवस्तु आदि ~~की~~ को अन्तिम रूप देने से पूर्व उसके प्रारम्भिक प्रारुप (Preliminary draft) का मूल्यांकन किया जाता है जिससे उसकी संरचनात्मक कमियों को दूर किया जा सके। अतः इस मूल्यांकन का उद्देश्य शैक्षिक कार्यक्रम एवं सामग्री की कमियों को पता लगाकर उन्हें दूर करने के उपाय बताना है।

संरचनात्मक मूल्यांकनकर्ता के कार्यों को तीन भागों में बांटा जा सकता है।

(i) शैक्षिक कार्यक्रम या सामग्री के विभिन्न अंगो के गुण या दोषों के संबंध मे स्पष्ट प्रमाण एकत्र करना।
(ii) प्रमाणों के आधार पर कार्यक्रम या सामग्री की कमियों ~~को~~ ~~[illegible]~~ का पता लगाना
(iii) कमियों को दूर करके ~~[illegible]~~ कार्यक्रम या सामग्री को अधिक प्रभावपूर्ण बनाने के लिए सुझाव प्रस्तुत करना।

[B] योगात्मक मूल्यांकन (Summative Evaluation) —

योगात्मक मूल्यांकन मे किसी पूर्व निश्चित एवं लागू शिक्षा नीति, पाठ्यवस्तु, योजना ~~[illegible]~~ व सामग्री की उपयोगिता की जाँच की जाती है तथा जाँच के आधार पर उसे भविष्य मे चालू रखने व न रखने के सम्बन्ध मे निर्णय लेना होता है। उपयोगिता की जाँच करने के लिए साक्षात्कार, प्रश्नावली तथा श्रेणी मापनी (Rating scale) आदि का प्रयोग किया जाता है तथा विशेषज्ञों की सहमती एकत्रित की जाती है। और अंत मे प्राप्त साक्ष्यो के आधार पर पूर्वनिश्चित शिक्षा नीति, पाठ्यवस्तु, पाठ्यक्रम, आदि को भविष्य मे चालू रखने या न रखने के सम्बन्ध मे निर्णय लिया जाता है।

Scanned by TapScanner

संरचनात्मक तथा योगात्मक मूल्यांकन में अन्तर
(Difference between Foomative & Summative Evaluation)

संरचनात्मक मूल्यांकन (Foomative Evaluation)	योगात्मक मूल्यांकन (Summative Evaluation)
1.) इस मूल्यांकन का प्रयोग शिक्षण प्रक्रिया की दशा का ज्ञान करने के लिए किया जाता है।	1.) योगात्मक मूल्यांकन का प्रयोग शिक्षण प्रक्रिया कितनी सफल रही इसका ज्ञान करने के लिए किया जाता है
2.) यह शिक्षण प्रक्रिया के दौरान लगातार होता रहता है।	2.) यह निश्चित अवधि के बाद होता है।
3.) इसका प्रयोग "अधिगम के लिए आकलन" (Assessment for Learning) के रूप में किया जाता है।	3.) इसका प्रयोग "अधिगम का आकलन" (Assessment of Learning) के लिए किया जाता है।
4.) इसका कार्य छात्रों को पृष्ठपोषण (feedback) प्रदान करना है।	4.) इसका कार्य छात्रों को ग्रेड और परिणाम प्रदान करना है।
5.) इसके द्वारा छात्रों को ये पता लगता है कि उसे कहाँ सुधार की आवश्यकता है।	5.) इसके द्वारा छात्रों को ये पता चलता है कि उसने कितना सुधार किया है।
6.) यह छात्र की सीखने की गति को बढ़ाता है। इसकी प्रकृति निदानात्मक (diagnostic) होती है।	6.) यह छात्र की योग्यताओं का मापन करता है। इसकी प्रकृति मूल्यांकन करने वाली होती है।

Scanned by TapScanner